PESM: पाँच तत्व, एक धरती

v0.5 · 13 अक्टूबर 2026 · अगस्त्येश्वर ट्रस्ट (Agastheeshwarar Trust)

पाँच तत्वों के ज़रिये यह देखने का एक तरीका कि हमारे रोज़ के फ़ैसले हमारे पानी, मिट्टी, हवा और जलवायु तक कैसे पहुँचते हैं, और फिर हम तक लौटते हैं। एक अवधारणा, जिसे हम तमिलनाडु के गाँवों के साथ परख रहे हैं।

PESM क्या है?

पंचभूत अर्थ सिस्टम मॉडल (PESM) किसी भी जगह को, एक घर से लेकर पूरे ग्रह तक, पाँच जुड़े हुए तत्वों के माध्यम से देखता है: **पृथ्वी** (मिट्टी, भोजन, सामग्री), **जल**, **अग्नि** (गर्मी और ऊर्जा), **वायु**, और **आकाश** (पानी, पेड़ों और वन्यजीवों के लिए जगह)। यह तमिल पंचभूत परंपरा पर आधारित है और उसे आधुनिक पृथ्वी विज्ञान के मापने के साधनों के साथ जोड़ता है।

यह क्यों ज़रूरी है

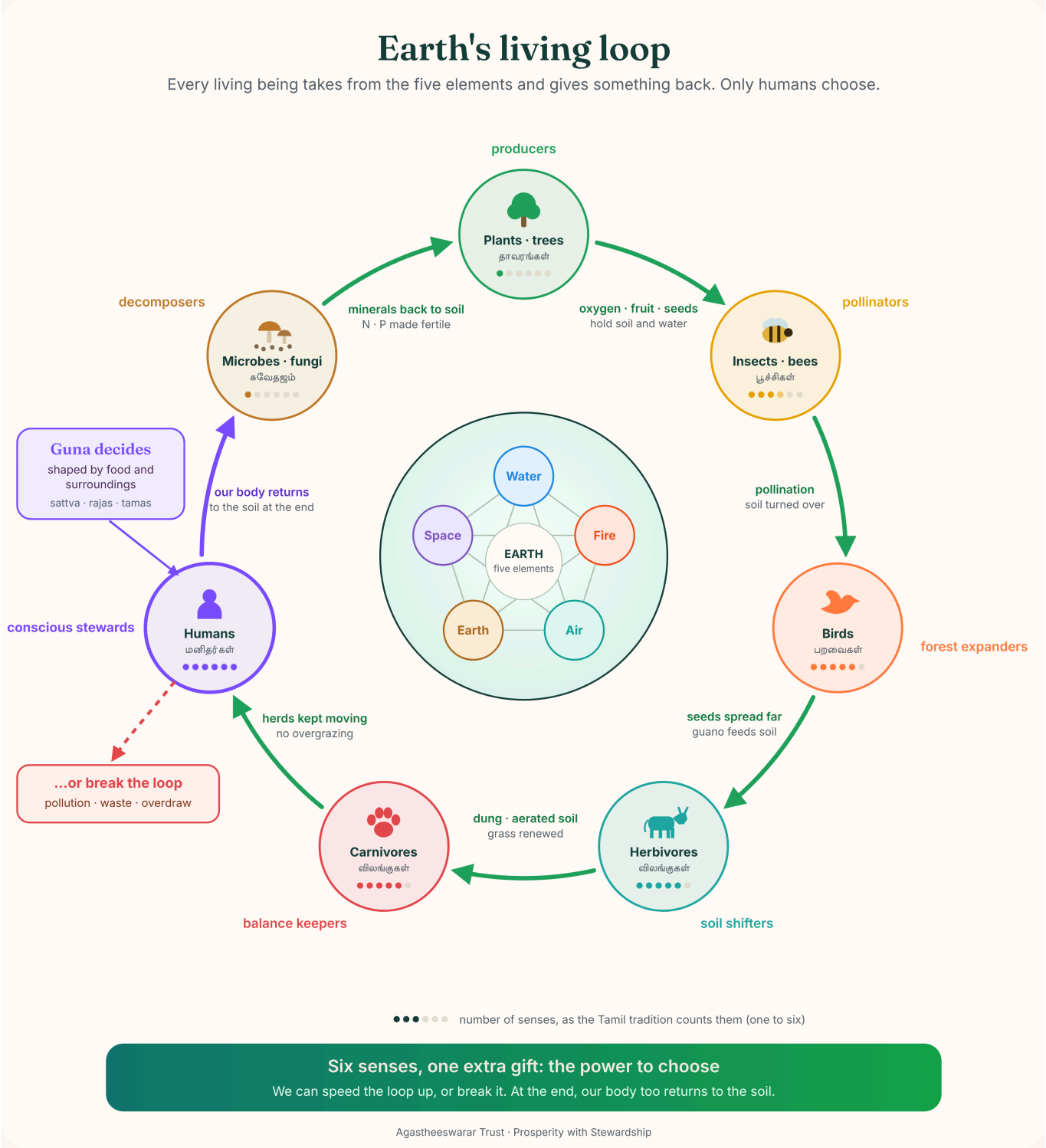
धरती जितनी तेज़ी से प्रकृति की भरपाई कर पाती है, मानवता आज उससे लगभग **1.7 गुना तेज़ी** से उसका उपयोग करती है, और अर्थ ओवरशूट डे (Earth Overshoot Day), यानी हर साल वह तारीख जब हम प्रकृति से उतना ले चुके होते हैं जितनी भरपाई धरती उस पूरे साल में कर सकती है, इस बार जुलाई के आख़िर में ही आ गया। वैज्ञानिक ऐसी नौ सीमाओं पर नज़र रखते हैं जो धरती को लोगों के लिए सुरक्षित रखती हैं; इन नौ में से **सात** अब पार हो चुकी हैं (Planetary Health Check 2025)। तमिलनाडु में लगभग हर तीन में से एक फ़िरका (राजस्व क्षेत्र) में, बारिश जितना पानी वापस भरती है, उससे ज़्यादा भूजल निकाला जाता है (CGWB 2024)।

फिर भी हम इन समस्याओं से एक-एक क्षेत्र (विभाग) के हिसाब से अलग-अलग निपटते हैं। धरती विभागों में बँटकर काम नहीं करती। जब भूजल स्तर गिरता है, तो उन्हीं कुओं में फ़्लोराइड बढ़ जाता है, पंप ज़्यादा बिजली खाते हैं, ज़मीन गरम हो जाती है, तालाब का जीवन घटने लगता है, और लोग इसे अपने शरीर और मन में महसूस करते हैं।

इसकी कीमत अब गिनी भी जा चुकी है। भारत में 2021 में लगभग 2.1 million (21 लाख) मौतों का संबंध प्रदूषित हवा से पाया गया (State of Global Air 2024), गर्मी हर दशक और जानलेवा होती जा रही है (Lancet Countdown 2025), और 1970 के बाद से निगरानी में रखी गई वन्यजीव आबादी 73% घट गई है (WWF Living Planet Report 2024)।

पाँच सरल विचार

1. **सब कुछ जुड़ा है।** एक तत्व पर पड़ा दबाव बाकी चार तक फैलता है।
2. **संतुलन सबसे कमज़ोर तत्व से तय होता है।** साफ़ हवा सूखे भूजल भंडार की कमी पूरी नहीं कर सकती। कोई जगह तभी स्वस्थ है जब कोई भी तत्व अपनी सीमा से आगे न धकेला गया हो।
3. **सारा जीवन इस चक्र में है, पर एक जैसे ढंग से नहीं।** बाकी जीव धरती के साथ लेन-देन का अपना चक्र चलाते हैं। एक पक्षी फल खाता है और उसका बीज दूर जाकर गिरा देता है, और एक नया पेड़ उग आता है। मधुमक्खियाँ पराग ले जाती हैं, केंचुए मिट्टी बनाते हैं, पेड़ छाया और बारिश लाते हैं। वे अपनी ज़रूरत भर लेते हैं और कुछ लौटाते हैं। मनुष्य सबसे ज़्यादा लेता है, अक्सर सीमा से भी आगे, और यह दबाव लौटकर हमारे **शरीर** (लू और गर्मी से बीमारी, फेफड़ों और दिल की बीमारियाँ, असुरक्षित पानी) और **मन** (तनाव, कम नींद, चिंता, गुस्सा, अकेलापन) तक आता है। हमारे ज़्यादा लेने का असर सबसे पहले दूसरे जीवों पर पड़ता है: कम बसेरे, कम प्रजातियाँ, और धरती को फिर से हरा-भरा करने वाला लेन-देन भी कम।
4. **गुण, यानी हमारा भीतरी स्वभाव, भी इस चक्र में है।** यही बात पाँच तत्वों की परंपरा जोड़ती है। हम जो खाते, पीते हैं, जिस हवा में साँस लेते हैं, जो सुनते हैं, और जिस माहौल में रहते हैं, उससे हमारा गुण बनता है: शांत और स्पष्ट (सत्त्व), बेचैन और चाहत से भरा (रजस), या सुस्त और भारी (तमस)। दबाव में पड़े तत्वों से भोजन खराब होता है और माहौल कठोर होता है, जो हमें और ज़्यादा चाहने और ज़्यादा लेने की ओर धकेल सकता है। हम इसे परखने लायक एक विचार के रूप में रखते हैं, तय तथ्य के रूप में नहीं।
5. **हम कितना चाहते हैं, यही वह हिस्सा है जिसे हम बदल सकते हैं।** हर घर जो लेता है, उससे गाँव बनता है, और गाँव की हालत लौटकर हर घर तक आती है। हम कितना लेते हैं, यह जानना और दूसरे जीवों के लिए जगह छोड़ते हुए उचित ढंग से बाँटना ही संतुलन की शुरुआत है।



हम नतीजे कैसे मापते हैं

PESM **आज़माए हुए तरीकों पर बना है, और नया इस बात में है कि यह कैसे मापता है।** तालाबों को फिर से जीवित करना, भूजल को फिर से भरना और देसी पेड़ लगाना पहले से कारगर है। हमारी हर परियोजना अपने आप में नतीजे देती है; PESM दिखाता है कि उसके साथ-साथ और क्या सुधरा, या क्या बिगड़ा। दो मानसून तक हम तमिलनाडु के साझेदार गाँवों के साथ काम करेंगे, और हर गाँव के साथ तुलना के लिए एक और गाँव होगा। हम कुछ सरल आँकड़ों पर नज़र रखेंगे, जैसे भूजल स्तर, पानी की गुणवत्ता, गर्मी, हरित आवरण, हवा, दिखने वाली जीवित प्रजातियाँ, और (सहमति से) लोगों का स्वास्थ्य और कल्याण, और इन्हें सरकारी सीमाओं के सामने रखकर देखेंगे। हमारे दावे शुरू करने से पहले लिख लिए जाते हैं, हम किसी स्वतंत्र कॉलेज को नतीजों की जाँच के लिए आमंत्रित करेंगे, और जो काम करता है और जो नहीं करता, दोनों हम प्रकाशित करेंगे।

हमारा रुख

विकास ज़रूरी है। हम चाहते हैं कि **विकास की हर योजना उसी रफ़्तार से चले, जिस रफ़्तार से धरती संभल सके।** PESM सरकारी, SDG या CSR कार्यक्रमों की जगह नहीं लेता। यह उनके साथ खड़ा रहता है, और यह देखता है कि किसी एक लक्ष्य की प्रगति की कीमत चुपचाप किसी दूसरे तत्व से ज़्यादा लेकर तो नहीं चुकाई जा रही। पाँच तत्वों की इस प्राचीन दृष्टि को हम स्वस्थ धरती की ओर दुनिया की यात्रा में आज़माने लायक एक अवधारणा के रूप में सामने रखते हैं, जिसे सिर्फ़ उसके मापे गए नतीजों से परखा जाए।

हमसे जुड़ें

स्वयंसेवकों का PESM तरीके को अपनाने और हमारे साथ उसे परखने के लिए स्वागत है, और शोधकर्ताओं, कॉलेजों, पंचायतों और CSR साझेदारों का भी। info@agastheeswarartrust.org पर लिखें। अनुरोध करने पर एक छोटा अवधारणा-पत्र उपलब्ध है।

धरती का जीवित चक्र, समूह के अनुसार

समूह	इंद्रियाँ · तमिल शब्द	धरती से क्या लेते हैं	भूमिका	क्या लौटाते हैं
सूक्ष्मजीव · फफूँद	1 · சுவேதஜம்	सूखे पत्ते, मृत शरीर, कचरा	अपघटक: जटिल पदार्थ को तोड़ते हैं	खनिज, नाइट्रोजन और फ़ॉस्फ़ोरस मिट्टी को वापस
पौधे · पेड़	1 · தாவரங்கள்	सूर्य की गर्मी, भूजल, हवा, मिट्टी के पोषक तत्व	उत्पादक: तत्वों को जीवित भोजन में बदलते हैं	ऑक्सीजन, फल, बीज; मिट्टी और नमी को थामे रखते हैं
कीट · मधुमक्खियाँ	3–4 · பூச்சிகள்	मकरंद, पौधों का रस, पराग, सड़ा-गला जैविक पदार्थ	परागणकर्ता और मिट्टी में हवा पहुँचाने वाले	लगभग 80% पौधों का परागण; चींटियाँ और दीमक पौधों के कठोर हिस्सों को फिर से मिट्टी में बदलती हैं
पक्षी	5 · பறவைகள்	जंगली फल, बीज, कीड़े, मछली	जंगल फैलाने वाले	दूर गिराए गए, उगने को तैयार बीज, और खाद का काम करने वाली उपजाऊ बीट
शाकाहारी जीव	5 · விலங்குகள்	घास, पत्ते, छाल, पानी	मिट्टी उलटने-पलटने वाले: चरते हैं, घूमते हैं, ज़मीन को मथते हैं	गोबर, जो केंचुओं और भृंगों को भोजन देता है और मिट्टी को भुरभुरा बनाता है
मांसाहारी जीव	5 · விலங்குகள்	शाकाहारी जीव	संतुलन बनाए रखने वाले	झुंडों को चलते रहने पर मजबूर करते हैं, ताकि घास के मैदान, नदी के किनारे और जंगल फिर से पनप सकें
मनुष्य	6 · மனிதர்கள்	ऊपर के हर समूह से कुछ न कुछ	सचेत संरक्षक (பகுத்தறிவு): चक्र को तेज़ भी कर सकते हैं और तोड़ भी सकते हैं	अंत में शरीर मिट्टी में लौट जाता है और चक्र चलता रहता है

- **समष्टि और व्यष्टि।** परंपरा दो स्तरों के नाम देती है: *समष्टि*, यानी पूरा (धरती, एक राज्य, एक गाँव), और *व्यष्टि*, यानी अंश (एक परिवार, एक व्यक्ति)। नुकसान और सुधार, दोनों ही इनके बीच दोनों दिशाओं में चलते हैं।
- **हर स्तर पर एक ही ढाँचा।** *"जो ब्रह्मांड में है, वही शरीर में है"* (அண்டத்தில் உள்ளதே பிண்டம், பிண்டத்தில் உள்ளதே அண்டம் — अर्थ: जो ब्रह्मांड में है, वही शरीर में है; जो शरीर में है, वही ब्रह्मांड में है)। परंपरा मानती है कि हर तत्व में बाकी चार तत्वों का भी कुछ अंश होता है, धरती में भी और शरीर में भी। हम इसे परखने लायक एक विचार मानते हैं, तथ्य नहीं।
- **PESM क्या जोड़ता है।** वैश्विक जलवायु मॉडल भौतिकी में बहुत अच्छे हैं। PESM वहाँ काम करता है जहाँ वे नहीं पहुँचते: अलग-अलग विभागों पर पड़ने वाले आगे के असर, लोगों के फ़ैसले को इस प्रणाली का एक जीवित हिस्सा मानना, और एक तालाब, एक गाँव, एक घर का स्तर।